समकालीन लेखिकाओं के साहित्य में स्त्रीवाद

संपादक
डॉ. अमनदीप कौर

सानिया पब्लिकेशन
दिल्ली-110094

12. समकालीन लेखिकाओं के काव्य में स्त्रीवाद — 102
हिना एस. राठोड

13. समकालीन नारीवादी लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी जागरण एवं संघर्ष — 106
मालोती बांगठाई

14. समकालीन लेखिकाओं के हिन्दी उपन्यास बदलते प्रवृत्तियों के संदर्भ में — 112
सुजिता लक्ष्मि एस.जी.

15. समकालीन लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री विमर्श — 117
डॉ. मोहिनी दहिया

16. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी के विविध रूप — 123
शाहिद हुसैन / डॉ. श्रद्धा हिरकने

17. समकालीन हिंदी स्त्री-कविता में स्त्री विमर्श — 129
रेखा. पी. मेनोन

18. समकालीन लेखिकाओं की कहानियों में स्त्रीवाद — 138
संदीप कौर

19. मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में स्त्रीवाद/स्त्री संवेदना — 141
सुश्री दुर्गावती

20. लंकापति रावण के राज्य में नारी की स्थिति — 149
डॉ. विक्रम

21. मध्यकालीन निर्गुणधारा की कवयित्रियाँ एवं स्त्रीवाद — 157
शाहबाज आलम

22. हाशिए के समाज पर राजनीतिक तंत्र की दोहरी मानसिकता — 162
अजय कुमार सिंह

23. सिनेमा और दलित स्त्री — 167
मुकेश कुमार मिरोठा

24. प्रवासी स्त्री कविता में स्त्रीवाद की संकल्पना — 176
डॉ. प्रिया ए.

समकालीन लेखिकाओं की कहानियों में स्त्रीवाद

संदीप कौर
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग,
गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर
email : sandeepkjosan90@gmail.com

साहित्य के परिदृश्य में स्त्री को केंद्र में रखकर होने वाले चिंतन ने एक नया रूप अपना लिया है। शताब्दियों से चले आ रहे ये वर्ग अपना महत्त्व सुनिश्चित कर चुके हैं। समकालीन लेखन में स्त्री के अस्तित्व की पहचान करने की कोशिश की गई है। आज के इस समाज में स्त्री के प्रति भोगवादी नजरिया तेज हो गया है। आज समकालीन महिला रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस स्थिति से उबरने की कोशिश की है। साहित्य और समाज का संबध बहुत पुराना है। उसका सबध अनादिकाल से चला आ रहा है और दोनों का संबंध मनुष्य से है। मनुष्य समाज में रहने के साथ-साथ समाज को प्रभावित करता है। साहित्यकार समाज का अंग है। समाज की परिस्थिति का प्रभाव उस पर पड़ता है। साहित्यकार समाज को साहित्य में बाँधता है। साथ ही साहित्य से समाज का मार्गदर्शन भी होता है। इस बात से मना नहीं किया जा सकता है कि साहित्यकार युग दृष्टा होता है। वह समाज की समस्याओं को देखता, सुनता और समझता है और उसी तरह साहित्य की सृष्टि करता है। समकालीन साहित्य लेखिकाओं ने अनेक कहानियाँ लिखी है। एक स्त्री के आधे-अधुरे रिश्तों के पीछे छिपी हकीकत को प्रस्तुत करती किरण अग्रवाल की कहानी "जो इन पन्नों में नहीं है" की नायिका का कथन-"हर नाम मुझे अपना ही लगता है। हर स्त्री का चेहरा अपने जैसा लगता है। जब कभी किसी स्त्री को अकेली भीड़ में देखती हूं तब लगता है कि वह तो मैं हूं तो मैं कौन हूं?" मन को उत्कंठा से भर देता है। इसी प्रकार प्रकृति करगेती की कहानी "ठहरे हुए से लोग" की नायिका, बाजार में कांच की दीवार की पीछे सजी-धजी खड़ी एक बुत, खुश है कि वह एक बुत है क्योंकि "शीशे की दीवारों के अंदर कोई 'गलत काम' भी नहीं हो सकता था उसके साथ।

किरण सिंह की कहानी "द्रोपदी पीक" में भी पर्वत की ऊँचाई पर बर्फ के नीचे दबा वही निर्मम सच उभर कर आ रहा है -"दुनिया में औरत का भाग्य और सब्जी मंडी में सब्जियों का भाव एक बराबर होता है। काहे की सब सब्जी वाले मिलकर यह तय कर लेते है। कोई दाम बिगाड़ने वाला तो उसे जात से बाहर किया जाता है।"

उपरोक्त सभी लेखिकाओं के जीवन का अनुभव अलग-अलग है। कहानियों के विषय भी एक दूसरे से बिलकुल अलग है। फिर भी सच एक ही है जो दिखाई दे रहा है -हर स्त्री स्वर से। ये कहानियाँ मात्र कोरी कल्पना नहीं होती। कथाकार की संवेदना अपने परिवेश में घट रही विसंगतियों के प्रभाव को ग्रहण कर लेती है। उन अनुभूतियों को वह शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त कर देता है।

प्रतिष्ठित लेखिका मैत्रेयी पुष्पा मानती है कि समस्याएं सभी औरतों के लिए वही है, बस उसके आकार-प्रकार अलग हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी की कहानी "पगला गई है भगवती" की स्त्री का स्वर मन को विचलित कर देता है। कृष्णा सोबती जी की बहुचर्चित कहानी "ऐ लड़की" में मृत्यु शैय्या पर पड़ी अम्मू की यह तड़प या पीड़ाभरी चाहत की अगले जन्म वह पुरुष होकर दुनिया को देखना चाहती है। शायद इस जन्म में उनकी भोगी हुई यातना का कहीं न कहीं मनोवैज्ञानिक भाव है जो केवल विरोध नहीं है, बल्कि सूक्ष्म बदले की भावना को भी दर्शाता है। समकालीन लेखिकाओं में चित्रा मुद्गल जी का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। उनका लेखन नारी के आत्मबोध को एक नई पहचान देता है। उनकी नायिका लीक की चौखट को पार करती है। सामंती मूल्यों तथा कथित समाज के षड्यंत्रों से टकराने में नहीं हिचकिचाती है। अपनी कथाओं के माध्यम से चित्रा जी का कहना है कि हमें स्वीकारना होगा कि आधी आबादी के धड़ के ऊपर उसका अहम मस्तिष्क भी है। किसी भी मामले में वह दक्षता और ऊर्जा में उससे कम नहीं है। समान अवसर के अधिकार को कागजों में नहीं, समाज में देना होगा।

समकालीन कहानी साहित्य पर अपनी अमित छाप छोड़ने वाली साहित्यकारों में मंजुल भगत जी का नाम भी प्रमुख है। उन्होंने अपनी कहानियों में प्रेम, संवेदना आदि विषयों को सूक्ष्मता से अंकित किया है। उनके प्रथम कहानी संग्रह 'गुलमोहर के गुच्छे' में उन्होंने नारी की समस्याओं को अंकित किया है कि किस प्रकार नारी की भावनाओं को रौंदा जा रहा है। उनके नारी विमर्श को एक ढांचे में डालकर नहीं देखा जाता। उन्होंने नारी विमर्श को अनेक पहलुओं को अपने साहित्य में स्थान दिया है।

दीप्ति खंडेलवाल एक प्रतिभा सम्पन्न महिला कहानीकार हैं। नारी मन की दुर्बलताओं का चित्रण उनकी कहानियों में देखा जा सकता है। 'एक अदद औरत'

कहानी में एक ऐसी स्त्री की दशा को दर्शाया गया है, जिसके लिए जीवनयापन करना एक तपस्या के समान बन गया है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों की प्रमुख विशेषता उनकी यथार्थता है। वे नारी के यथार्थ को बिना किसी डर के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ पाठकों के मन पर अपनी गहरी छाप छोड़ती हैं। उनकी नारी पात्र इसी समाज में जीवन रूप में देखी जा सकती है, क्योंकि उन्होंने अपने अपने आस-पास के समाज में जो कुछ देखा, जो कुछ भोगा, उसे ही अपनी कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया।

समकालीन कहानी लेखन परम्परा में रजनी गुप्ता का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। "स्त्री जीवन के प्रश्न हो या युवाओं के सपनों की उड़ान, राजनीतिक सवाल हो या स्त्री का बदलता हुआ रूप, पुरुष से मुक्ति का सवाल हो या आत्मनिर्भर बनकर एक स्वाभिमानी स्त्री की इंसान के रूप में जीने की उत्कंठा, रजनी जी ने हर दष्टि और दिशा में अपनी लेखनी को पहुँचाया है।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में हिन्दी कथा साहित्य में जिन श्रेष्ठ स्त्री कहानीकारों ने अपनी अलग पहचान बनाई हैं उनमें मनीषा कुलश्रेष्ठ का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी के अस्तित्व को एक नई पहचान देने के साथ हिन्दी कहानी साहित्य को नई संभावनाओं, संवेदनाओं और अनुभवों से भी समृद्ध किया है। महिला विमर्श पर चर्चा होते हुए कई दशक बीत गए। अनेक लेखिकाएं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को उसकी स्थिति दशनि का तथा उससे ऊपर उठकर एक समन्वयवादी समाज का प्रयास किया है। इस विषय में अभी आगे और प्रयास किए जा रहे है।

संदर्भ सूची

1. समकालीन कहानी लेखिकाओं की विभिन्न कहानियों के संदर्भ से
2. कहानी 'जो इस पन्नों में नहीं है', किरण अग्रवाल
3. कहानी 'ठहरे हुए से लोग' प्रकृति करगेती
4. कहानी 'द्रोपदी पीक' किरण सिंह
5. कहानी 'ऐ लड़की' कृष्णा सेबती, राजकमल प्रकाशन 2008
6. कहानी 'गुलमोहर के गुच्छे' मंजुल भगत (1989) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
7. कहानी 'एक अदद औरत' दीप्ति खंडेलवाल